मैथिली (प्रतिष्ठा)
बी० ए० (H) पार्ट० ३
पेपर - ०८

डॉ० बसंत कुमार
अतिथि शिक्षक
दिनांक - ०८.०८
27/03/2

प्रकरण - पुरुष परीक्षा

बलाहस्तु सुप्तेषु नगरजनेषु निर्जने निशाभागे यदा श्मशानदेशं गतस्तदा न किमपि दृष्टवान्, किन्त्वाकाशवाचं शुश्राव रे बलाह! विक्रमादित्यस्तव खेदमपनीतवान्। इत्यनिर्धारितार्थमेव वाचं प्रत्याकलयन् प्रातः किमर्थिभ्यो दास्यामीति चिन्ताव्याकुलितः परावृत्य गतोऽपि पर्यङ्कशयानोऽपि न निद्रां

एम्हर बलाह, जखन नगरक लोकसभ सूति रहल छल, जनशून्य रातिक निशाभागमे श्मशान पहुँचलाह तँ किछु देखबामे नहि अयलनि, किन्तु आकाशवाणी भेलनि - हे बलाह! विक्रमादित्य अहाँक कष्टकेँ दूर कए देल छथि। अर्थ स्पष्ट बुझबामे नहि अयलनि तेँ गुनि-धुनि करैत भिनसर याचक लोकनिकेँ की देबनि एहि चिन्ता करैत घर जाय पलंगपर पड़ि रहलाह

शीघ्र आगिला अंकमे